| | | | |
|---|---|---|---|
| | | તે પ્રકારની કેદ અથવા દંડ અથવા બંને. | |
| | એજ. | ૩ મહિના સુધી બેમાંના ગમે તે પ્રકારની કેદ, અથવા ૫૦૦ રૂપિયાનો દંડ અથવા બંને. | કોઇ પણ માજિસ્ટ્રેટ. |

ાધાની વિરૂદ્ધ ગુનાહ.

| | | | |
|---|---|---|---|
| ાન, | જામિન લઇ શકાય. | ૬ મહિના સુધી બેમાંના ગમે તે પ્રકારની કેદ, અથવા દંડ, અથવા બંને. | કોઇ પણ માજિસ્ટ્રેટ. |
| ટ. | એજ. | ૨ વર્ષ સુધી બેમાંના ગમે તે પ્રકારની કેદ, અથવા દંડ અથવા બંને. | એજ. |
| જ. | એજ. | એજ. | એજ. |
| | ૧૯૩૦ | | |
| જ. | એજ. | એજ. | એજ. |
| જ. | એજ. | ૩ વર્ષ સુધી બેમાંના ગમે તે પ્રકારની કેદ, અથવા દંડ અથવા બંને. | સેશન કોર્ટ અથવા જીલ્લાનો માજિસ્ટ્રેટ. |
| ગુનાહને ન નિ- તો હોય ; અને ને કુળી ય તો . | તે ગુનાહને માટે જામિન લઇ શકાતો હોય તો લઇ શકાય, નહીં તો નહીં. | તે ગુનાહને માટે જે હોય તેજ. | તે ગુનાહની જે કોરટથી તજવીજ થઇ શકતી હોય તે કોરટ. |
| આ- અ- | એજ. | તે મંડળીના અંગ ભુતનીજ શિક્ષા, તથા તે મંડ- | એજ. |

२९०५

# सुक्तावली

सघला आगमोनेंबोल

मगनलाल द[illegible] छपावी

प्रसीधकरी·

अमदावाद मध्ये·

मांडवीनीपोलमां सुरदासशेठनी

पोलनासांमेअे [illegible]चरलाछिनेयं

दना डेहेलामां

छगनलाल मनसुख गहासे

धमप्रकाश प्रेसमां

छापीप्रगटकरी·

संने·१८८३ संवत·१९३९

किंमत·६ आना·

ए ा चोपडी मां ग्रंथे ग्रंथ पाये
लल्लुभाई सुर ं है छपावेली, तमनी
पर जगी ल छैन आमोम छापी छे

ં અર-૧

| | | | |
|---|---|---|---|
| ૧૧૧ | ૧૧૨ | ૧૧૩ | ૧૧૪ |
| ૧૩૧ | ૧૩૨ | ૧૩૩ | ૧૩૪ |
| ૨૧૧ | ૨૧૨ | ૨૧૩ | ૨૧૪ |
| ૨૩૧ | ૨૩૨ | ૨૩૩ | ૨૩૪ |
| ૩૧૧ | ૩૧૨ | ૩૧૩ | ૩૧૪ |
| ૩૩૧ | ૩૩૨ | ૩૩૩ | ૩૩૪ |
| ૪૧૧ | ૪૧૨ | ૪૧૩ | ૪૧૪ |
| ૪૩૧ | ૪૩૨ | ૪૩૩ | ૪૩૪ |

ં અર-૨

| | | | |
|---|---|---|---|
| ૧૨૧ | ૧૨૨ | ૧૨૩ | ૧૨૪ |
| ૧૪૧ | ૧૪૨ | ૧૪૩ | ૧૪૪ |
| ૨૨૧ | ૨૨૨ | ૨૨૩ | ૨૨૪ |
| ૨૪૧ | ૨૪૨ | ૨૪૩ | ૨૪૪ |
| ૩૨૧ | ૩૨૨ | ૩૨૩ | ૩૨૪ |
| ૩૪૧ | ૩૪૨ | ૩૪૩ | ૩૪૪ |
| ૪૨૧ | ૪૨૨ | ૪૨૩ | ૪૨૪ |
| ૪૪૧ | ૪૪૨ | ૪૪૩ | ૪૪૪ |

१(३०

## २. नायका

### १११

अेरीकुरुन घ गां आेकारछे, तेम्मोरे नेकामनी च्यंता छे, तेमां त्रण पांचसो, अघडामां ८ तसो, वेपारनोन गा च्यालसेरे वेपा देवामां लाल होसे तुननें छी वसा डा आव्याछे. मननामनोरथ फुगसे अेनी दि रोनां तारी नम गी न्यंगे तलछे. १

### ११२

अेरी कुदनु फुग पांलगो अेरीकुरुन घगांमध्य म ठेकाणु आंप विचारलो अेकाम यंसोना मन मां तुननें घ गी च्यंता छे मनमां घ र्‍ वीमासे छे. दिन जनें घगां सांमान्य छे. रानीश्वरनां न्कीय लाल थसे मनमां च्यंता करे मरसेरे रो नां दे दा मसंन होसे देटी दि रोनी नावर रनी रूपी नकु आवे छे. २

११३

अे [illegible] हुं [illegible] गसांलगो तुननें लाल जो
वे अर्थना लाल [illegible] वे हल [illegible] चंता छे ते मरशे
पुत्र [illegible] अ उपने तारा दिन मध्यम हता ते गया
[illegible] डा आवे छे तेनो मनमां विस
वासराखने माता अंबा [illegible] वचन छे अेनी
निशानी तारो नमणी [illegible] तल छे ३

११४

अे शुकननुं [illegible] गसांलगो अे शुकन घणां रू
डा छे [illegible] मंगळीक होशे लोमला
ल अर्थलाल लक्षलाल [illegible]
होशे मित्रनो मेळाप [illegible] वे आनयो मा [illegible] ग
घणुं रूडा छे [illegible] दवतानी [illegible] रने नयां [illegible]
मनोरथ [illegible] माता [illegible] नुं वचन छे अे
नी निशानी तारी [illegible] नी पीठे तल छे ४

१२१

ए शुकननुं फल सांभलगो ए शुकन घणुं सारुं छे·
ने काम धार्यो तेमां लाभ उपजे· गदेवतानी कृपाथी
ने मनना मनोरथ होवे· धनने लाभ होवे· सजनमां
मेळाप होवे· ने वस्तुथी मळवा विचारो छो ते मळशे
पहोंचशे घणो लाभ होशे· वेहना चंतामटीने सुख
उपजे· ल आभा ता व छे· एनी निशांनी
तारी न मणी अंगे तल छे· ५

---

१२२

ए शुकननुं फल सांभलगो· ए शुकन घणुं भला
मनाछे· वेपारमां लाभ होशे· थी
सनमां गाम परदेशथी लाभ होशे·
मा सांतुलने मारी शाली
नुं
न छे· नी निशांनी ता ने तारी ने
घणी प्रिति छे· ६

---

१२३

अे शुकननुं फळ सांभळो अे शुकन घणुं रूंगीक
नाछे माटे सुलक्षणो होशे तुं कुटंबनी वृद्धि होशे स्त्रीनो ला
लहोशे अन नथी मेळाप जोशे परदेश त्रफनी अेक मोटी
खुशाली उपने तारा दलमां अेक च्यंता छे ते दीन रूप मां
मटशे सर्व कांम होशे शत्रुनो नाश होशे पुत्रनुं सुख
थशे तने जे च्यंता छे ते मटशे तुनने दीवश [illegible]
व्या छे माता माहाकाळीनुं वचन छे अेनी नि[illegible]नी
तुं घरमां कंकास कर्या पछे मनमां पाछोताप करे छे ७

---

१२४

अे शुकननुं फळ सांभळो अे शुकन [illegible] गळी कना
छे त्याहाथी मेळाप जोशे शोग कं[illegible] होशे वेपा
रमां लाभ जोशे ने मनमां च्यंता छे ते मटशे [illegible]त्रनो ला
लहोवे [illegible]तुं कज होवे राज्यथी सन्मान [illegible] मन [illegible]
हेली च्यंता नल दीठ [illegible] कुळदेवतानी [illegible] अने
दान आपे लाभ जोशे अने कांम संघा होशे माता [illegible]णी
नुं वचन छे अेनी निशांनां ने तीन दीन मां ते अेक कांम
गुस की धुं छे ८

१३१

ए शुकननुं फळ... लगो. ए शुकन घणां लाल
मा छे. कुटुंबनी वृधि थेशे, ने वस्तु गई छे ते पा...
वशे. तेथी मित... छ तेथी मे आप थेशे, पुत्रनुं तथा
स्त्रीनुं सुख होशे, ने एक कांम विच्यारो छो ते विच्यारने;
पणनुं छीतावगमत करने. ए कांममां तु... थेशे
... थेशे. तुं मंगळनुं व्रत करे छे ते करने. माता
मा ... नुं वचन छे. एनी निशांनी तारे ... शागणे
...नी चंता घणी छे. ९

१३२

एर ... कननुं फळ सांलगो. ए शुकन ... तेनाछे, ने
कांमनो विच्यार करो छो ते कांम रूडी रीते ... थशे. स्त्री
नो मेळाप थेशे. सजन ... मित्र ... थेशे. मनमां एक ...
सचंता छे ते एक स्त्रीथी मळशे. संतोष राखने. पुत्र
... धनलाल पुरवीथी शा एथी एक होशे. गयुं
धन पा... आवशे. ... नी पुन्य करने. मनना मनो
रथ फळशे. शांम्भ थेशे. माता ... नुं वचन छे.
एनी निशांनी ताशे ... पारा
तलछे. १०

१३३

ऍ शुकननुं फळ सांभळो· ऍ शु[illegible] [illegible]गाम च[illegible]नमां चंतावर पेय, य [illegible]नारी होवे, ता शरीरे कष्ट ऊपजे, मनमां चीतव्यो काम तेनी ष्फळ होवे, तारी स्त्रीने शरीरे क[illegible] ऊप[illegible] [illegible]ण होवे, हनुमानजी नुं वचन छे ऍनी निशां- [illegible] छे· ११

१३४

ऍ शुकननुं फळ सांभळो· ऍ शुकनमां द- स्मनथी जीतशो, राज तथा कोर्ट [illegible] आ दमो धो लाभ होशे, [illegible] हीराथी तथा पुरवही शाथी [illegible] लाभ [illegible], ताहारा भुंडां [illegible]ता तेग[illegible] [illegible] आव्या छे· कुळदे वताजी पुज[illegible]थी शत्रुनो नाश थशे· माता तुळजानुं वचन छे· ऍनी निशांनी ता री नमणी भुजऍ तल छे· १२

૧૪૧

એ શુકનનું ફળ [illegible] શુકનથી તુજને વેપારમાં તથા માલમાં ઘણો લાભ હોશે, વિદ્યા તથા પુત્રનો લાભ હોશે, શત્રુ તુજને પગે નમશે. મ[illegible] એ ફળમાં તુજને ઘણી વડી ખુશાલી ઉપજશે, મનમાં આણંદ હોવે, જગનનાથજીનું વચ્ન છે. એની નિશાની તારે તારી સ્ત્રીશું લડાઈ થઈછે. ૧૩

---

૧૪૨

એ શુકનનું ફળ સાંભળો. અંગણીકનાં વાળવા ગશે, ધન લાભ હોવે, ત્યાંહથી પ્રીત વધે, મનનો ચીંતા મટે, કુટંબનો વૃદ્ધી હોવે, સજનથી મેળાપ હોવે. એ વાતમાં સંદેહ શાણ્ય નહીં. જે વસ્તુમાં ટોટો હશે તેમાં લાભ હોવે, જેમાંથી વસ્તુ [illegible] હાથમાં આવે, રાજથી સન્માન હોવે, મનના મનોરથ સીધ હોશે. માતા ભેરવીનું વચ્ન [illegible] નિશાની તારે કોઈથી લેહે[illegible] નથી. ૧૪

---

૧૪૩

એ શુકનનું ફળ સાંભળો· એ શુકનથી કાર્ય
સીઘ્ર હોશે, ભવાનીની પુન્યકરને મંગળી કાર્ય
ઉપનશે, ન્યા લાભ તથા લક્ષ્મી લાભ હોશે, તા
રા દલની ચંતા છે તે મટશે, પણ એક શત્રુ તારો
છે તે તુનને દગો કરવા ફરે છે તેનો ભરૂસો મત ક
રને· એકવાર [illegible] પણ દગો કરશે તે માટે સા
વધાન રેહને· માતા મા [illegible]નું વચન છે· એ
ની નિશાની તારી દેહી ઉપર તલ છે· ૧૫

---

૧૪૪

એ શુકનનું ફળ સાંભળો· એ શુ[illegible] ધર્મના
[illegible]ત મલશે, મનના મનોરથ ફળશે, એટલે
[illegible] નને ધન મળશે, ચંતા કષ્ટ મટશે, મનના-
ચિંતા દુર હોશે, કુળ દેવતા સાર કરશે, હવે મેહે
રનને રૂડા આવ્યા છે તું મંગળનાં પુ[illegible]ન-
શે· તું [illegible] વચન છે· એની
[illegible] શાની તારે મિત્રથી મેળાપ· ધા· ૧૬

---

૨૧૧

એ શુકન૦ ફળ[illegible] શુભ છે તેંને મોટા [redacted] છે તે સિધ્ધ હોશે, ધર્મનો ભાગ તુજનેં મોટો છે હવે તુજનેં સુખ ઘણો હોશે, મિત્ર[illegible], ભાઈનો મેળાપ હોશે, વેપાર[illegible] હોશે, પુત્રનો લાભ હોશે, તું શાની ચિંતા કરે [illegible] ને તેથી તનેં સુખ હોશે; માતા તોતળાજીનું વચન છે એની નિશાની તારે તારી સ્ત્રીથી સઘાકલેશ રેહે છે ૧૭

---

૨૧૨

એ શુકનનું ફળ સાંભળો એ શુકનથી મંગળી [redacted] લાભ હોશે, મિત્રથી મેળાપ [redacted] હોશે, ચાતુર[illegible] લાભ ઘણો હોશે, તું પરદેશ જવાનું કરે છે ત [redacted] પરગામના કામની ચિંતા છે તે કુળદેવતાની [redacted] થી મટશે, શત્રુ દુર હોશે, નગરના ધનું વચન છે એની નીશાની તારા ઘરની સ્ત્રી ઘ[illegible]ણી જોરાવર છે ૧૮

## २१३

अेशुकननुफळसांभळो.अेशुकनथी ताराहृदयनीचं ताछेतेसघळीसतनेवचनोलाभहोशे,मनमां खुशालीथाय ने, [illegible] कामसीगरहोशे,लाघीनो संजोग जेशेकुटं बनुंसुखउपने,शरीरे [illegible] मळशे.तारोअे फेरातु छे तेनोनाशहोशे.तुजने [illegible] घणा रूडा नपाव्याछे. तु गुरुनी पुजाकरने.ताहरूंकामसीगरहोशे,माता [illegible] आण नुंवचनछे.अेनीनिशांनी ताराघरमां [illegible] छे.१९

---

## २१४

अेशुकननुफळसांभळो,अेशुकनथी तुजने घणो लाभहोशे,नेवस्तु हाथमांथी गई छे ते पाछीआवशे.व- ळीतुंजनने दुरथी अेकमोटो लाभहोशे.मनमां अेकशुभ चिंताछे ते पणमटशे.वळीलाल जेरी पुरवदीशाथी अेक लाभहोशे.तारो अेकशत्रुछे तेनो विश्वास मतकरने.कुळ देवतानीपुजाकरीने अेहेनु ध्यानकरीने तेथी भलुकरी,माता आशापुरीनुंवचनछे.अेनीनिशानीतारे अेकमोटीघा तगईछे.२०

---

२२१

एशुकननुं फळ सांभळो एशुकनमां तुनने
त्रणवरस पेमां सुखमनथी ते हवे तुनने त्रण वरस
सुधीमां सुखे रहेशी, तारा दलमांनी मोटी चंता छे
ते नरशे, तारुं नशीब चंचळ छे; दुःखहता ते गयां ने ह-
वे मंगळीक होशे, मनना मनोरथ फळशे, तारे हाथे
थो एक वस्तु पडी गई छे, ते पाछी तारे हाथ आवशे
अने सुखमां गुजरो रेशे, मातागातदेवीनुं वचन छे
एनीनीशानी तारे पाणीनी मोटी घातगई २१

---

२२२

एशुकननु फळ सांभळो एशुकन घणां मध्यम छे
मित्रथी विरोध थाय, शत्रुथी मेगाप होवे, राजनन-
पा देश उपजे, ने तमने मनमां चंता छे ते काम मो
टुं छे ते होवु मुशकेल छे, पनननी हाण उपने गुप्त चिंता
मननी मटन होतुं शीनी नजर रहेशे देवी दुरगा
ठकुशांती होशे मातानगढे वचनछे एनीनि
शानीतारी नमणी एअमे तसछ २२

---

## २२३

अेशुकननुं फळ सांभळो. अे शुकननुं फळ मध्य
मछे, कलेश थीपनेने कांम विचारो छो ते घणुं लुं छे,
करीशतो लोकमां निंदा होशे. [illegible]
पारमां रोटो आवे, मारे अोर कांम विचारने, अे कांम-
नां निंदा छे. तुं रानीश्वरनुं दान कर ने, माता हिंगला
ननुं वचन छे. अेनी निशांनी तुं [illegible]
[illegible] २३

---

## २२४

अेसुकननुं फळ सांभळो तुंने [illegible] घणी चिंता
घणी छे, ते थकी कलेश घणो करे छे; पण हवे तुं आनंद
नमें । अने, [illegible] वेतारे लाभ होशे. [illegible] दहीनकला
ते [illegible] डा आव्या छे. हवे तने गुरुनो
लाभ [illegible] ने तेथी कांम सारुं होशे. गुरुने दाने लाभ
होशे, श्रीतानुं वचन छे. अेनी निशांनी [illegible]
डाभी आनुं [illegible] . २४

२३१

अे शुकन नुं फळ सांभळो· मंगळीकनां ? ल्नं
वाने, अेटलो लाभ होवे, शत्रु पगे नमशे, धन
नो ल[redacted] गंन
नाथनुं [redacted] घर
नो[redacted]· २५

---

२३२

अे शुकननुं फळ सांभळो· अे शुकननुं फळ म
अमछे· तें कार्य तुंअे विचार्यो छे ते काम थशे नही·
मनमां भय उपने, अे का[redacted] हा[redacted]ने,
शरीरे क ीडापने कु[redacted] लेश उपने, स्त्रीथी
क्लेश [redacted] थी सुखउपने·
तुं राजनुं दान करने तेथी सुख होशे· हनुमान
नुं वचन छे· अेनी निशानी तुं देखीअे प-
स्तावो करेछे· २६

---

२३३

ए शुकननुं फळ सांभळो. शुकनने मन चिंतवो. ए शी
घ्रमळी, ते सीध्रने पामशो. परंतु परकार्यनी चिंता छे ते मन
मांतुं मनोरथ विचारे छे. मारे काम करे ते विचारीने करने.
तथापी मोटु काम करीने, तेमां लाभ होवे, पण टेकना तानां
[illegible] नकीने ते थकी तारो कार्य सीघ्र थशे. मंगळनुं प्र
त [illegible] [illegible] छे. एना नि[illegible]नो ता
राहलने विशे फीकर [illegible] छे. २७

---

२३४

ए शुकननुं फळ सांभळो. ए शुकनथी तारो कार्य
शीघ्र होशे. [illegible]नो कलश मळशे. गुमनी वारता को
छी आगळ के [illegible]ने मत. तारा [illegible]डा हीन हता ते गयाने ता
रे [illegible]डा हीन आव्या छे. तुनने धन लाभ होशे, सास्य
[illegible] होशे. [illegible] मांटे, नस वाघे, इष्टदेवनी [illegible] कुळ
न[illegible]नो निशानो [illegible] लिने विशे [illegible] चिंता
छे. २८

२४१

ऋेशुकननु फळ सांभळो॰ ऋेशुकनथी लाभ होशे॰
विह्लवानी तथा स्त्रीनी चंता छे ते मटशे॰ ऋने ऋे
पर दे ऋगर परगाम जवानी चंताछे ते मटशे॰ स्वां
जङनी ःर्थी होशे॰ ऋेजम॰ ब्यनी तारे मित टुटी छे ते
नी पाछी मित जेडशे॰ ऋे तारी ज्ञतनो तारी ऋदश्मा
छिकरेछे ते दुरथशे॰ तु कुटुंबमां जीतु ज करने॰ तारा
दसमां तेने काम थाय छे ते काम करतां जशे॰ माता जन
गदेवीनं वचनछे॰ ऋेनी निरांनी तारी रुपीने पे
रेतल ः॰ २९

२४२

ऋे कनळां गनसांभळो॰ ऋे शुकनथी तुन नें ज्ञमणो
लाभथशे॰ मनना मनोरथ सरशे॰ मीतवी वच्च पांमशे॰
ने ऋादमीथी मनमां लाभ ऋावयछे ते ऋादमीथी लाभ
होशे, तारा दुशमननी खराबी थशे ने ता लक्षुयशे॰ तु
धनांध्वरनी पुजा करजे तेथी तारं धार्यं काम थशे॰ माता
त्वमाएीनुं वचन छे ऋेनी निरांनो तारां नमएपि ज्ञलमे
तसछे॰ ३०

## २४३

एसुकननुं फळ सांभळो एसुकनथी वीचारेलुं कु-
री हवे तुजने दीवस सुखना आव्या छे मनना धारेला का-
म फळशे, धनलाभ होशे कलेश मटशे, एक अकस्मात अ-
चींतो तुजने मोटो लाभ होशे, पुत्रनुं सुख थशे, दुशमननो
नाश होशे तुं संभणी पुजा करजे तेथी तारा मनगमी
गहोशे माता कालकानुं वचन छे एनी निशानी ता
नमणो कुकडो छे ३१

---

## २४४

एसुकननुं फळ सांभळो एसुकन घणां रुडा छे ता-
रां काम सिध थशे, तुजने दीन घणां जीयारनां आव्यां छे प-
ण मनमां संतोष राखजे नाहांन तारुं काम सिगर थशे,
एक आदमी तारुं काम बगाडे छे तेनो विस्वास मत
करजे, धननो तथा स्त्रीनुं सुख होशे तुं शनीनुं व्रत
करजे तेथी तारुं धार्युं काम शीघ होशे माता कालका
नुं वचन छे एनी निशानी ताजी छींदी उपर त-
ल छे ३२

## ૩૧૧

અે શુકન [illegible] કુગ [illegible]ાંભળો. અે શુ[illegible] ડા છે. [illegible]નને ઘરનાં તથા [illegible]રેિ રીચ્યંતા છે તથા કાંઈક પર ગાંમ નવાની ચ્યંતા છે તે [illegible] દનાચ્યંતા મટશે; પણ તારા [illegible]ગ [illegible] વતાનાં [illegible]ન્ન કરને ગ્નેહેની પુન્ન કરને તેથી મન નામનોરથ કુગશે. તારો શ[illegible] છે તે રમશે. રા[illegible]ન્નની [illegible]થી લાભ [illegible]શે. માતા તોતળા[illegible] વચનછે. અેની નિશાંની તારી સ્ત્રી ઘ[illegible]ગી રી[illegible] [illegible] છ. ૩૩

## ૩૧૨

અે [illegible] કુગ સાંભળો. અે શુકનથી મ[illegible] [illegible] મનોરથ કુગશે, ધનનો લાભ હ[illegible]ો, [illegible] શેશરીરની કષ્ટી મટશે. ઘ[illegible]ગાં દીવશની ચ્યંતા છે તથા રોગ છે તે મટશે. મનમાં [illegible]ીરા[illegible] ને, વેપારમાં લાભ હોશે, ને કાંમ ધાર્યું છે તે સિગ[illegible] [illegible]શે [illegible] માતા [illegible]ની [illegible]ન્ન કરને તેથી તા[illegible] કાંમ સિગ[illegible] હોશે. માતા લક્ષ્મીજીનું વ[illegible] [illegible] અે[illegible] નિશાંની તારે સ્ત્રીથી ઘ[illegible]ગી પ્રિતી રેહે છે. ૩૪

૩૧૩

આ શુકનનું ફળ સાંભળો- એ શુકનથી ધનની ચિં
તા છે પણ તારો સ્વભાવ ઘણો ટીકો છે તેથી તારા દુ
શ્મન ઘણાં છે મિત્ર પણ શત્રુ થઈ ગએલા હલકું થા-
ય છે- પણ આ કામ તું કરીશતો પછી બીમારી ઘ-
ણી થશે માટે ઓર કામ વિચારને, તેમાં સુખ હોશે,
તું મેહેનતી છે અને તેથી સુખ હોશે, તારી ગુસની
ચીંતા મરશે, ભલું હોશે- માતા ખોડીઆરનું વચ-
ન છે એની નિશાની તું રાત્રે જંગલ દેખે છે- ૩૫

---

૩૧૪

એ શુકનનું ફળ સાંભળો- એ શુકનથી કલ્પના,
મંગળીકની વારતા થશે, ધન લાભ હોશે, સર્વે કાર્ય
સિધ્ધ હોશે, મનમાં [illegible] મનનો
ધરમી છે માટે મનમાં ચીંતા રાખને મત; તું પરકાર્ય
કરે છે તેમાં તારો જસ આગળ છે તેથી તારા સુ
હોશે તું મંગળની પુજા કરને તે પછી તારો જસ વાપરશે
કામ સિધ્ધ હોશે- માતા ગતરની- વચન છે- એની નિશા
ની તારા ઘરમાં એક જગે ગુપ્ત ધન છે- ૩૬

३२१

ओे शुकननुं फळ सांभळो. ओे शुकन मध्यम छे, तारा मनमां चिंता घणी छे, सिद्ध थशे वा थशे ने कांम सिद्धे-थाय. ओर कांम चीतवन्ने ओे कांम करीश तो अवनस क्लेश नीघ गी हांनी थशे. मास ओेकथी तुनने चिंता छे. राज्य नीत्रकथी कांईक चिंता उपने माटे कांम विचारी कीने तेथी सा [illegible] तेथी तारुं भलुं होशे. माता भाकांकवीनुं वचन छे. अेनी निशांनी तारे कोठथी लोएु नथी. ३७

---

३२२

ओे शुकननुं फळ सांभळो. ओे शुकनथी तुनने लाभ होशे, तारा मननी चिंता छे ते मटशे, तुनने लाठथी तथा मित्रथी घणी खुशाली होशे, शरीरे आरोग्य होशे, धनलाभ तथा वेपार विशेष लाभ होशे, राज्यथी खुशीनो लाभ होशे, उत्तम फळनी प्राप्ति होशे, स्त्री पासेथी लाभ सुख होशे. तुं कुळदेवतानी पुजा करजे माताबालवधानुं वचन छे. अेनी निशांनी तारे माथे घरेनाला छे. ३८

---

३२३

ए शुकननुं फळ सांभळो. ए शुकनथी तुंनने नसला ल होसे, [redacted] शत्रुनो नाश होसे, सननथी भेगाप होसे, सणी गेहे शंतोषना आवे छे. डीलनी चंता मटसे. स्त्री पुत्रथी सुख उपने, चीतव्यो मोरो लाभ होवे. वं तथा ऊीतनथी एक लाभ होवे. तुं गेहेनी पुजा करने ते [redacted] नुं वचन छे. एनी निशानी तारे वान सुकनो स्वान वेहेछे. ३९

---

३२४

ए शुकननुं फळ सांभळो. ए शुकन सहुलीकना [redacted] ठेथी तेवे पार होसे, पण तेमां संपत मळसे, मन चितव्यो कार्य सिद्ध थसे, कोई काममां तने गुप्त चिंता छे ते मट [redacted] आपणा कुळदेवतानी पुजा की [redacted] ज नेग सहीकरछे. ४०

---

૩૩૧

એ [?]કનનું ફળ સાંભળો-એ શુકન મંગળીકનાછે,
[?]ન કાંમના સીગ્ર હોસે, કુટંબ સાભ હોસે, ધન સાભ
હોસે, લક્ષ્મી લાભ હોસે, કુળદેવતાની પુજાકીને એ
કાંમ ભ[?] થસે; વેપારમાં લાભ હોસે, મનમાં સંતોષ
[?]ને[?] મનથી ધર્મી છે તેથી તારૂં કાંમ શીગ્ર હોસે,
પણ [?] મંગળની પુજા કરને તેથી તે કાંમ થાશે છે
તે નિ[redacted]ગેરો, માતા જોકાઈનું વચન છે. એની નિ
શાં[?]ની તારાં ત્રણ ગી[?] જાએ તલછે. ૪૧

૩૩૨

એ શુકનનું [?]ળ સાંભળો-તેં જે કાર્યચિતવ્યોછે તે
ધરો ન[?] એર કાંમ વિચારજ્યે; તુજને ગેહે દીસાલું
ડી[?], મિત્રછે તે શ[?] થાયછે. બે ત્રણ વરસ થયે તુજને
ઉ ચાટછે [?] મનનો ત્યાગો છે. ધીરજ ધીરે ત્યાલું થસે.
તુંરાતુજી [?]ન કરને તેથી તારૂં [redacted] ગેરો, મા
તા વેરાહીનું વચન છે. એની નિસાંની તારા છા
તીએ તલછે. ૪૨

३३३

अे गुरुननुं फळ सांभळो अे गुरुथी तुं [redacted] मां चितवेछे ते ता[illegible] कांम करुं थशी, तें मनमां चितव्योछे तेकार्यमां लाभ होशे, तुं चंता मत कर ने, [illegible] आदमीथी [redacted] सुख उपने, [redacted] स चंता छे तेम टशे· माता माहाकाळीनुं वचन छे· अेनी निशा[illegible] [illegible] छे· ४३

---

३३४

अेरा [redacted] थी तने ला- भ होशे, मनना मनोरथ फळशे, अ ग [illegible] तव्योछा भ होशे, तारो गयो वे[illegible]पार [illegible] थ आवशे, मित्रथं घथाथी लाभ होशे, तारे दुःख छे ते नशे, ने घणुं सु ख थशे· ते अेक चितमां [illegible] कांम धार्युं छे ते कांमथी तने [redacted] थशे, पुत्रनो लाभ होशे, दुस्मन दुर होशे शरीरे शाता होशे, आतुर कग लाभ होशे, तुं भवांनी नी पुजा करने, तारुं सीघ्र होशे, माता क्षेत्रपाळनुं व चन छे· ४४

૩૪૧

એ શુકનનું ફળ સાંભળો. તને ઘણાં દિનની ચિં-
તા છે તે મટશે. અને લાભ થશે. તું મનમાં ચીંતા મત કરને.
તને સુખ હોશે, હવે લાભ હોશે, સજ્જન [illegible] ધે,
તારે મન ગુપ્ત ચિંતા છે તે મટશે, પુત્રનું સુખ થશે, તું હ-
નુમાનની પુજા કરને. તારે શાની હાંને લાભ હોશે. કુ-
ળદેવનું વચન છે. એની નિશાની તારે સઉથી
લેહેણું સમાન છે. ૪૫

---

૩૪૨

એ શુકનનું [illegible] ળ સાંભળો. એ ગુજરાતનું [illegible]
શહેરનું વનાં ચીંતા છે તે મટશે, તુંને ઘણો ધનનો
લાભ હોશે. મનની ચિંતા છે તે મટશે. ને વસ્તુ હાથ
માંથી ગઈ તે પાછી હાથ આવે, ને થી મિત દુરી હોય
તે [illegible] ઉપને,
પણ [illegible] ગણેશની પુજા કરને તેથી તારું ભલું થશે. મા-
તા અંબા [illegible] વચન છે. એની નિ[illegible]ની તારી
હાંઉપર [illegible] છે. ૪૬

---

૩૪૩

અરી. કનનું ફળ સાંભળો. એ શકુન મધ્યમ છે. તને વ્યાપારમાં નસારમાં નછે. તને ઘણાં દીવસની ચિંતા [illegible] ગઈ છે તે આપવાની ફોગટ છે. પણ પરમેશ્વરને મહેરની [illegible] ને, નહીંતો [illegible] એની નિશાની તારે એ [illegible] નથી મિત્ર ટળી છે તે [illegible] નો ના [illegible] માં ન[illegible] વચન છે. એની નિશાની તારા પડોશમાં [illegible] થી. ૪૭

૩૪૪

એ શકુનનું ફળ સાંભળો. મંગળીકનાં વાજાં વાગશે, ઘણો લાભ થશે, લાંબી મુદતથી મિત્ર વધશે, મનની ચિંતા મટશે, કુટુંબની વૃદ્ધિ થશે, [illegible] થશે, એ વખતમાં સંતોષ [illegible] અને જે વખતમાં કુશળ થાય છે તે વખતમાં લાભ થશે, ને હાથથી વસ્તુ ગઈ છે તે પાછી હાથ આવે. મનના આશરમાં [illegible] મનના મનો[illegible] પુત્ર કાંને, [illegible] સ વારતા પાસે [illegible] થાવે, માતા [illegible] વચન છે. એની નિશાની તારે ડાબે [illegible] ૪૮

### ૪૧૧

એ રે શુકનનું ફળ સાંભળો: ઘણી હાંણ હોવે, શરીર પીડા નીપજે, આશા નિષ્ફળ હોવે, હાથમાં આવ્યો ધન જાય, ... ઓર કાંમ વિચારે તેમાં તારે ભલું હોવે, તે કાંમમાં ચિંતા રાખે મત. અંગીકાર કરો ... ધનનો લાભ ... કરીશ, કલ્પના કરી તે સઘળો સિદ્ધ નો મેળાપ કરીશ, ... ગણની પુજા કરને તે ... કુળદેવી માતા ... વચન છે: ... તેની નિશાની તારી ... ઉપર તલ છે: ૪૯

### ૪૧૨

એ શુકનનું ફળ સાંભળો: એ શુકનથી તારા ચીતમાં સ્ત્રી પુત્રની ... સંબંધીની ચિંતા છે, કાંઈક ધનની પણ હાંણ થઈ છે, ઝઘડો પણ છે તે સર્વે મટશે: તારી ચિંતાથી ઉદ્દીવશે મટશે: મિત્રમાં મેળાપ હોશે, ... કાંઈક વાંછના કરને તેથી તારું ભલું ... હનુમાનની સેવાના કરને તેથી તારું કાંમ સિદ્ધ થશે: ... ગણના ... વચન ... એની નિશાની તારે ... થી ... ૫૦

४१३

ए शुकननुं फल सांभलो ए शुकनथी तुनने धन
नी चिंता छे ते मटशे पीडे दुःख छे ते वांमशे, शत्रुथी स
मान होशे, परगाम परदेशथी एक धातनी लेशे,
वनने स्त्रीनी चंतानी चंताछे ते मटशे तारी गर्भवस्तु
छे ते पाछी हाथ आवे, मनना मनोरथ सीध होशे, तुं
गे स्त्री पुत्र कने तेथी जाय काम सीध होशे, हनुमा
ननुं वचन छे ५१

---

४१४

ए शुकननुं फल सांभलो ए शुकननुं फल मध्यम
छे, दुःख लासे छे, मथम चंता उपने, पछे खुशाली होय, शु
ननी चंताछे ते मास एकमां मटशे, धन लाभ लेशे, श
रीरे सुख उपने मनना मनोरथे पुरशे, तुं स्त्री
पुत्र कने तेथी तारे थाय काम सीध होशे, मातानी
ता वचन छे, एनां स्त्रीनी ताली आ
वलछे ५२

૪૨૧

એ શુકનનું [redacted] કનના ફળ
નને [redacted] છે, મિત્રનો મેળાપ ... સ્ત્રીની ચં
તા મટશે, ... [redacted]
શે ... ની પુજા કરને નેથી ... ઉપને રાની
... વચન છે એની ... [redacted]
... રાગ છે ૫૩

---

૪૨૨

એ શુકનનું ફળ સાંભળો ... નને ત્રણ વરસ
[redacted] ધન ... ત્ર ... ત
થા તને સ્ત્રીનું ... [redacted] ન,
... કોઈનો વિસ્વાસ કરીશ નહીં તારૂં ... ગ
... [redacted] ... કરને તે-
થી ભલું થશે ... માતાનું વચન છે એનીનિ
શાની તારે ધનનો લાભ ... ૫૪

## ४२३

चा र् कननुं कुण सांभळो. तारो अर्थ सघय मळशे, सननो मेळाप थशे, तसुं आरोग आदे न वनो रोग नशे, धार्यां कांममां सिधी थाय, आपणां कुळदेवतानी पुजा कीने तेथी हल [illegible] रा [illegible] वेला साल [illegible] वचन छे. अेनी निशानी तारा पेट उपर तल छे. ५५

---

## ४२४

अे शुकननुं कुण सांभळो. आ शुकनथी घणां दीननी चंता छे, ते कार्य मोटो धार्यों छे; पण विलंब थी थैथी कार्य सारे सिधी थशे, ऊतावळ मत करने, ऊतावळ कीधेथी कार्य बगडशे, म [illegible] सर नमेरा मने, नीदान त [illegible] शाली होशे, आपणां कुळदेवतानी पुजा कीने, तेरव [illegible] वचन छे. अेनी निशानां तारे घर [illegible] सुख सांभांन्य छे. ५६

---

४३१

आ शुकननुं फल सांभलो. ए शुकनथी तारा
मनना मनोरथ फलसी. तुनने थ[illegible]
ते मटसी. त्याहेनो मेंगाप होसी. ताचा हुक्मना दिन
हता ते [illegible] हवे मंगलीक होसी. हीशा धंननी प्राप्ति
होसी. स्त्री पुत्रनो सुख होसी. तुं गेहेनी पुन्न करने
तेथी मोटुं मंगलीक होसे. माता अंबाजीनुं वचन
छे. एनी निशानी तारी स्त्री न्हुराग छे. ५७

---

४३२

आ शुकननुं फल [illegible] शुकनथी चिंता,
[illegible] दुख मटसे. मंगलीक होसे. वीहीवा तथा पुत्र
नो लाभ होसे. परगाम तथा परदेशनी चिंत[illegible] ते
मटसे. परगाम जवानुं करे [illegible] त्यां घणो लाभ खुशा
लीथसे. तुं हनुमाननी पुजा करने, तेथी तारुं सरवेकां
मसीध होसे. माता आशापुरीनुं वचन छे. एनी
निशानी तुं सपनामां स्त्री देखेछे. ५८

४३३

अेनुकननुं ग सांलगो अेन नथी नने
नलाल नोतमित्रथी मेळाप थशे नने वहेली
पत्रिका थशे श को परदेशथी पुत्र स्त्री सुख ने
तुं मनना घ गो पमी हर्षथी ताहरुं लागु थशे
तुं मंगलनो पुन्य नेतेथी ता काम थशे
शाता अन दवानुं मम्पछे अेनी निशानी
तारी नमणी लुन्नअे तल छे ५९

४३४

अे शुकननुं फल सांलगो अे शुकनथी ताहरा
मनना मनोरथ फळशे तुं मनमां चिंतारेछे ते चिंता
रनी मनमां पुरी थशे नने ताम हवेताना
मकाहथी मनना मनोरथ फळशे प्रभु
नी न कृपा ने तारी गुप्त चिंता छे ते सफळ थशे माता
नाग बचन छे अेनी निशानी ता अेक
गुप्त चिंता छे १०

४४१

अेसुकननुं फळ सांभळो–अेसुकनमां लाभ छे
नें पीडा होवे, कलेश उपने, दलनें संकट होये, अंगे
पीडा उपने, [illegible] ननें मेहे [illegible]गां भरी गया छे, पांच रात
[illegible]रन नाखने, पछे कांम करने, कांम [illegible]लसक
[illegible]छे, हाथमां वस्तु गइ छे ते घा[illegible]सीथी आ
पणनुं मेहेनी [illegible] रने, तेथी तारुं कांम सीघ्र
[illegible]माता [illegible]नुं वचन छे–अेनी नीशानी तारे
[illegible]तल छे–६१

---

४४२

अेसुकन[illegible] सांभळो–अेसुकन केमना छे–ता
[illegible]म धर्मेथी सीघ्र होसे, प[illegible]मनो अंत्यनली
[illegible]तो कांम सीघ्र होसे, अंत्यसीधे कांमनी[illegible]गथ
[illegible]पंननां हांग[illegible]छे–[illegible] अोर[illegible]मि विचारनेते
[illegible]ता[illegible]कुंडु [illegible]ो, तुं अेहेनु दान करने, आपण
गोहेयतानां [illegible]जे करने, तेथी कांम सीघ्र होसे, माता
[illegible]हेराइ[illegible] वचन छे–अेनी नीशानी तारा शरीरे
[illegible]न नथी–६२

---

૪૪૩

એ રે ઉનનું શગુન સાંભળો એ શુકનથી બારે-
હું કાંમ નહી થાય, ધનની હાંણ પણ હોવે, માંહો માંહી
માં વિરોધ ઉપજે, જીવ ની એક મોટી ઘાત છે તે મારે
તું [illegible] કાંમ કરીસ તો ઠીક લાભ હો
સે, તે મારે તું વિચારી કાંમ કરજે, મૈહેની પુજા કરજે
તેથી કષ્ટ ટળસે, માતાજી કાઈનું [illegible] છે, એની નિ
શાંનો તારી છડી ઉ[illegible]તલ છે, ૬૩

---

૪૪૪

એ શુકનનું [illegible]ગ સાંભળો, જે કાંમ તમે વિચારો
છો તે સિધ્ય થસે, ધનલાભ હોસે, સ્ત્રીનું સુખ ઉપ[illegible],
પુત્રનો લાભ હોવે, ગઈ વસ્તુ હોય તે પાછી [illegible] આ
વે, એક દીન, એક પક્ષ, એ[illegible] માસ, એક વરસ સુધીમાં
[illegible] ગુ[illegible] ગેલાગસે, વેહેવારમાં લાભ હોસે, રાજ
થી સન્માન [illegible]સે, તું મનમાં ચંતા ઘણી [illegible] આસ
પાં [illegible] પુ[illegible] કાંમ સિધ્ય હોસે, માતા
અંબાજીનું વચન છે, એની નિશાંની તારી છડી ઉપર તલ છે.

૬૪

---

# रुकनावली

२ भाग

| | | | |
|---|---|---|---|
| | શખસોને રાખવા. | | થવા તે ર પ્રમે કરેલા મુજબ. |
| ૧૫૧ | પાંચ અગર વધારે શખસોની કોઈ મંડળીને વિખરાઈ જવાનો હુકમ થયા પછી જાણી જોઈને તે મંડળીમાં શામિલ થવું અથવા જારી રહેવું. | એજ. | સદ |
| ૧૫૨ | હંગામો બંધ પાડવા વગેરેનું કામ કરતા હોય તેહેવામાં કોઈ સરકારી નોકરના ઉપર હુમલો કરવો અથવા તેહેને હરકત કરવી. | એજ. | |
| ૧૫૩ | હંગામો કરાવવાના ઈરાદાથી દુષ્ટતાથી કોઈના મનમાં ક્રોધ ઉત્પન્ન કરવો. અગર હંગામો થાય, તો. | એજ. | |
| | અગર ન થાય, તો. | એજ. | |
| ૧૫૪ | જમીનનો માલિક અથવા કબજેદાર હંગામા વગેરેની ખબર ન આપે, તો. | વગર વારંટે પકડાય નહીં. | |
| ૧૫૫ | જે શખસના ફાયદાને સારૂ અથવા જેની વતી કાંઈ હંગામો કરવામાં આવે, તે શખસ અગર તે અટકાવવાને સઘળા કાએદેસર ઈલાજો ન કરે, તો. | વગર વારંટે પકડાય નહીં. | |
| ૧૫૬ | જે માલિક અથવા કબજેદારના ફાયદાને સારૂ કાંઈ હંગામો કરવામાં આવે, તે શખસનો મુખ્તાર, અગર તે અટકાવવાને સઘળા કાએદેસર ઈલાજો ન કરે, તો. | એજ. | |